

Book-Post

56

To,

*If not delivered  
please return to :*

**EDITOR,  
THE VEDIC PATH,  
P.O. Gurukul Kangri,  
(U.P.) 249404.**



ॐ श्री गणेशाय नमः

संवत् १८८३ मार्गशीर वदितर्ती  
 यापेभृगुवासुरे घद्यादि ४८३८  
 मृगाशीर घद्यादि ३५१३ सिद्धि घ  
 द्यादि ३५१५ वश्रिकाकीर्त्तनादिना  
 ज्नि ४ दिन्मान ३५१५३ तत्रेष्ट  
 योदयार ३३१५३ तत्रसमयेमिधु  
 नलग्नोदयेब्राह्मण।टिज एण्योवं  
 प्रोपरमधार्मिकीजीतमह्वामजग  
 मकृष्णगुरुधर्मपत्नीप्रसूता

४	चं	२ के	२ के
५	पू	१	३
६	१२	६	१२
७	११	७	११
८	१०	८	१०
९	९	९	९

३१२० मे  
 ६१४० का  
 १०१०० म  
 ११२० क  
 १६१४० मि  
 २०१०० फ  
 २३१२० तु



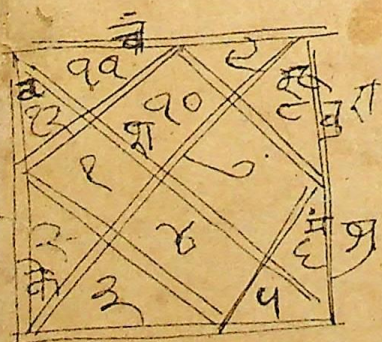
स	वि	ता	म	ध	क	ला	व	मा
शु	व	चं	स्व	व	प्र	मं	व	रा
च	च	स्व	चं	ज	स्व	च	व	सि
बु	मु	म	व	श	श	व	म	चं
व	व	श	श	व	श	श	व	चं
व	व	व	व	व	व	व	व	पं
व	चं	चा	चं	व	उ	व	चं	य
गु	मं	मं	श	म	श	म	व	सु
म	व	स	म	श	म	म	व	म
चं	पा	पा	चं	स्व	श	मं	स्व	न
मं	व	व	श	व	व	व	म	द
व	व	चं	व	प्र	श	श	चं	एका
प्र	व	व	पा	पा	पा	प्र	व	दा

एतत्काले दिये मिति मुक्त... विनिर्दिता... एतत्काले दिये मिति मुक्त... विनिर्दिता...  
 गुणयित्वा यदुक्तं माग्यलक्ष्यतदेव पूर्वपश्चिम तत्तद्यदीनापलम्ब्य  
 शोधयन्त्यत्र सर्ववत् सर्वोक्तप्रकेतकुर्यादि कतिदिक्॥ एवं लभ्य  
 यप्रमेजाते तयोर्लभ्यद्वयमयोः सविषये संयोजितो जायात यैः सपुम  
 चतुर्थो म्पातां॥ एवमवतनवत्तु एयं जाते पुनः प्रप्रिमन्नावा ना मुत्पन्निमा  
 लभ्यो नतु व्यतः षष्टां प्रायुक्तनसंधिरग्रेषां प्रायेजनात् इति॥  
 लग्नस्य चतुर्लभ्येन संपातनं कृत्वा यद्वैषम्यं प्रादिकं तस्य षष्टां प्रा  
 ग्गृहीत्वा तेन युक्तं लग्नं लग्नसंधिर्भवति॥ तेनापि षष्टे प्राग्युक्तं  
 लग्नसंधिर्द्वितीया धनभावो भवति॥ पुनः धनभावे षष्टां प्रासंयो  
 नैकृते धनभावसंधिः॥ पुनः तस्य संयोजने धनभावसंधौ सति तत्त  
 योभावाभावो भवति॥ पुनः तस्य तस्मिन् संयोजने जाते तृतीयभावा  
 नावस्य संधिर्भवति॥ एवं त्रयोभावा लग्नादयो विसंयोजनानां  
 पुनरपि चतुर्धा दीनां संधीनां मुत्पन्निमाह षष्टां प्रागेनैक  
 युक्तं सुखादिति॥ एकस्माद्गोषां प्रास्य संपातनं कृत्वा यद्वै  
 षष्टां प्राग्युक्तं सुखं भवतं सुखं भवतस्य संधिः॥ पुनः पुनः तस्य  
 संयोजने कृतं सुखं यद्वैषम्यं योभावा संधौ जाताः एतद्व



# श्री गणेशाय नमः

रु	वै	मं	उ	व	शु	श	ग्र	हः
२२ ३०	२५ ००	२२ ३०	२३ ३०	३०	३२ ३०	३०	४८	हं
२ ३५	२० ८	८ ३३	२० २६	२०	३०	२२	३	हं
२२ २५	३ ३०	२५ ००	२२ २५	३ ४५	३०	२२ २५	ह	दा
७ ३०	५	७ ३०	७ ३०	७ ३०	३ ३०	७ ३०	दे	स्वा
२ २५	३ ३०	३ २५	३ २५	२ ३०	२ २५	३ २५	न	वां
२२ २५	२५ ३०	२० ३०	२२ ३०	२२ ३०	२२ ३०	२२ ३०	वि	पका
५२ ३०	४५ ४०	४५ ४०	४५ ४०	४५ ४०	४५ ४०	४५ ४०	यो	गः
२३ २	२२ २	२२ २	२२ २	२२ २	२२ २	२२ २	व	ला



वैलो सुपय र वण फेर उ दे प्र स करणे फे १०  
 वं स कर गुण देण फे ३० ती प्रा कर ल व  
 दू लेण फे १२ वार कर घदा देण फे ३०  
 जो से स रह जावे उ सदा सु प्रा मी जान देण  
 जो वारा ताही ॥ इ कु वि च पा देण शे स दे

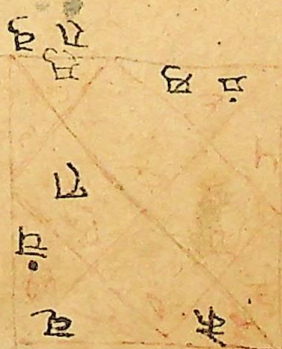
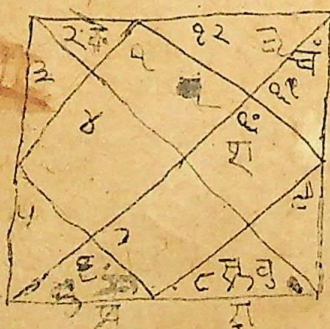


मं वाः ॥ त्रिसिक्खना दय  
 धृ साधि बद्धे ननु का  
 परे संप्रमादयः सुः एवं  
 भावाः द्वादशा ॥

12 13 14 15 16 17 18 19 20 21 22 23 24 25 26 27 28 29 30 31 32 33 34 35 36 37 38 39 40 41 42 43 44 45 46 47 48 49 50 51 52 53 54 55 56 57 58 59 60 61 62 63 64 65 66 67 68 69 70 71 72 73 74 75 76 77 78 79 80 81 82 83 84 85 86 87 88 89 90 91 92 93 94 95 96 97 98 99 100 101 102 103 104 105 106 107 108 109 110 111 112 113 114 115 116 117 118 119 120 121 122 123 124 125 126 127 128 129 130 131 132 133 134 135 136 137 138 139 140 141 142 143 144 145 146 147 148 149 150 151 152 153 154 155 156 157 158 159 160 161 162 163 164 165 166 167 168 169 170 171 172 173 174 175 176 177 178 179 180 181 182 183 184 185 186 187 188 189 190 191 192 193 194 195 196 197 198 199 200 201 202 203 204 205 206 207 208 209 210 211 212 213 214 215 216 217 218 219 220 221 222 223 224 225 226 227 228 229 230 231 232 233 234 235 236 237 238 239 240 241 242 243 244 245 246 247 248 249 250 251 252 253 254 255 256 257 258 259 260 261 262 263 264 265 266 267 268 269 270 271 272 273 274 275 276 277 278 279 280 281 282 283 284 285 286 287 288 289 290 291 292 293 294 295 296 297 298 299 300 301 302 303 304 305 306 307 308 309 310 311 312 313 314 315 316 317 318 319 320 321 322 323 324 325 326 327 328 329 330 331 332 333 334 335 336 337 338 339 340 341 342 343 344 345 346 347 348 349 350 351 352 353 354 355 356 357 358 359 360 361 362 363 364 365 366 367 368 369 370 371 372 373 374 375 376 377 378 379 380 381 382 383 384 385 386 387 388 389 390 391 392 393 394 395 396 397 398 399 400 401 402 403 404 405 406 407 408 409 410 411 412 413 414 415 416 417 418 419 420 421 422 423 424 425 426 427 428 429 430 431 432 433 434 435 436 437 438 439 440 441 442 443 444 445 446 447 448 449 450 451 452 453 454 455 456 457 458 459 460 461 462 463 464 465 466 467 468 469 470 471 472 473 474 475 476 477 478 479 480 481 482 483 484 485 486 487 488 489 490 491 492 493 494 495 496 497 498 499 500 501 502 503 504 505 506 507 508 509 510 511 512 513 514 515 516 517 518 519 520 521 522 523 524 525 526 527 528 529 530 531 532 533 534 535 536 537 538 539 540 541 542 543 544 545 546 547 548 549 550 551 552 553 554 555 556 557 558 559 560 561 562 563 564 565 566 567 568 569 570 571 572 573 574 575 576 577 578 579 580 581 582 583 584 585 586 587 588 589 590 591 592 593 594 595 596 597 598 599 600 601 602 603 604 605 606 607 608 609 610 611 612 613 614 615 616 617 618 619 620 621 622 623 624 625 626 627 628 629 630 631 632 633 634 635 636 637 638 639 640 641 642 643 644 645 646 647 648 649 650 651 652 653 654 655 656 657 658 659 660 661 662 663 664 665 666 667 668 669 670 671 672 673 674 675 676 677 678 679 680 681 682 683 684 685 686 687 688 689 690 691 692 693 694 695 696 697 698 699 700 701 702 703 704 705 706 707 708 709 710 711 712 713 714 715 716 717 718 719 720 721 722 723 724 725 726 727 728 729 730 731 732 733 734 735 736 737 738 739 740 741 742 743 744 745 746 747 748 749 750 751 752 753 754 755 756 757 758 759 760 761 762 763 764 765 766 767 768 769 770 771 772 773 774 775 776 777 778 779 780 781 782 783 784 785 786 787 788 789 790 791 792 793 794 795 796 797 798 799 800 801 802 803 804 805 806 807 808 809 810 811 812 813 814 815 816 817 818 819 820 821 822 823 824 825 826 827 828 829 830 831 832 833 834 835 836 837 838 839 840 841 842 843 844 845 846 847 848 849 850 851 852 853 854 855 856 857 858 859 860 861 862 863 864 865 866 867 868 869 870 871 872 873 874 875 876 877 878 879 880 881 882 883 884 885 886 887 888 889 890 891 892 893 894 895 896 897 898 899 900 901 902 903 904 905 906 907 908 909 910 911 912 913 914 915 916 917 918 919 920 921 922 923 924 925 926 927 928 929 930 931 932 933 934 935 936 937 938 939 940 941 942 943 944 945 946 947 948 949 950 951 952 953 954 955 956 957 958 959 960 961 962 963 964 965 966 967 968 969 970 971 972 973 974 975 976 977 978 979 980 981 982 983 984 985 986 987 988 989 990 991 992 993 994 995 996 997 998 999 1000 1001 1002 1003 1004 1005 1006 1007 1008 1009 1010 1011 1012 1013 1014 1015 1016 1017 1018 1019 1020 1021 1022 1023 1024 1025 1026 1027 1028 1029 1030 1031 1032 1033 1034 1035 1036 1037 1038 1039 1040 1041 1042 1043 1044 10

[illegible]

25



CC-0. Gurukul Kangri University Handwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA



५  
 पूगीफलपंचरत्नादीनिनिक्षिप्य वस्त्रवेष्टनं धान्यसमर्पणंचकृत्वा तदुपरि पंचन  
 अथावाहनं पूजनंच ॥ पूर्वदिशि दुग्धजलपूरिते कलशे वस्त्रवेष्टितायां स्वर्णप्रतिमायां व  
 स्थापयामि १ इति स्थापयेत् ॥ दक्षिणे दध्युदकपूरिते ० वरुणं ० वरुणाय नमः वरुण  
 घृतोदकपूरिते कलशे अजैकपादम् ॥ अजैकपादाय नमः अजैकपादमावाहयामि स्था  
 ते कलशे अहिर्बुध्न्यम् ॥ अहिर्बुध्न्याय नमः अहिर्बुध्न्यमावाहयामि स्थापयामि इति स्थ  
 णं पूष्णे नमः पूष्णमावाहयामि स्थापयामि इति स्थापयेत् ॥ ५ ॥ इत्यावाह्यवस्त्र  
 वाहनमंत्रैः षोडशोपचारैः प्रत्येकं पूजयेत् ॥ अनेन पूजनेन वस्त्रादयौ देवाः प्रीयंतामिति  
 यमाय नमः यममावाहयामि स्थापयामि ॥ १ ॥ एवं सर्वत्र ॥ धर्मराजाय ० धर्मराजम् ०  
 ४ वैवस्वताय ० ५ कालाय ० ६ सर्वभूतक्षयाय ० ७ औदुंबराय ० ८ दध्नाय ० ९ नीलाय  
 त्राय ० १३ चित्रगुप्ताय नमः चित्रगुप्तमावाहयामि स्थापयामि १४ इत्यावाह्यपुष्पाणि दि  
 जयेत् ॥ अथाग्निस्थापनम् ॥ होता हस्तमात्रं चतुरस्रं स्थंडिलं कृत्वा कुशैः परिसमुह्य त  
 मध्ये प्रागग्रप्रादेशमात्रमुत्तरोत्तरक्रमेण त्रिरुल्लिख्य अनामिकांगुष्ठाभ्यां मृदमुद्धृत्य ऐश  
 णि स्थापयेत् ॥ ततो दक्षिणतो ब्रह्मासनादि चरुश्रपणाग्निपर्युक्षणांतं कर्म कृत्वा आज्ये  
 इदं ० १ इंद्राय ० इदम् ० २ अग्नये ० इदम् ० ३ सोमाय ० इदं ० ४ इत्याधारावाज्ये



शूद्र-  
॥३५॥

र्यात् ॥ ततः वस्वादिपंचप्रधानदेवानांप्रत्येकं समिच्चरुतिलाज्यादिद्रव्यैरष्टोत्तरशतम  
स्वाहा इदं० १०८ वरुणायस्वाहाइदं० १०८ अजैकपदेस्वाहाइदम्० १०८ अहि  
इति यमायस्वाहा इदं० ८ धर्मराजाय० इदं० ८ मृत्यवे० इदं० ८ अंतकाय० इदम्  
याय० ८ औदुंबराय० ८ दध्नाय० ८ नीलाय० ८ परमेष्ठिने० ८ वृकोदराय० ८  
होमंकृत्वा ॥ चरुणा अग्नयेस्विष्टकृतेस्वाहाइदं० इतिस्विष्टकृद्धोमंकुर्यात् ॥ ततः आ  
इदं० ३ अग्निवायुसूर्येभ्य० इदम्० ४ अग्नीवरुणाभ्यां० इदम्० ५ अग्नये० इदम्०  
प्रजापतये० इदं० ९ इतिनवाहुतीर्हुत्वास्थंडिलंपरितोदिकपालेभ्योमाषभक्तवलीनृदद्यात्  
अग्नयेनमम इतिपूर्णाहुतिर्हुत्वास्तरणक्रमेणवर्हिर्रुत्थाप्याज्येनाभिघार्य अग्नये० इदम्  
शनमाचमनंचकृत्वाप्रणीताजलेनशिरःसंसृज्यपवित्रेअग्नौप्रक्षिप्य ऐशान्यांप्रणीतान्यु  
मोकश्च ॥ ततःपंचमूर्तिदानम् ॥ अद्येत्यादिपठित्वा अमुकप्रेतस्यपंचकमृत्युदोषपा  
धनिष्ठाप्रतिमांवसुदैवतांसतिलान्नांसघटांसोपस्कुराममुकगोत्रायामुकशर्मणेब्राह्मणायदा  
यांवरुणदैवतांसमाषान्नां० २ तृतीयांअजैकपाददैवतांससर्षपान्नां० ३ चतुर्थीमहिर्बुध्न्यदै  
५ इति ॥ ततः षड्ब्राह्मणभोजनसंकल्पः ॥ ततः पंचकलशोदकेनयजमानस्यसपरिवारस्य



॥ इति शूद्रश्राद्धपद्धतिः समाप्तः ॥



ॐ श्री गणेशाय नमः ॥ अथ जीव आ द्रुविधिः ॥ तत्र ब्रह्मपुत्राणे देशाकालधनमृद्धा  
 मवसा मुद्दि ते ॥ जीवि ते मति जीवाय दद्यात् ॐ स्वयं नरः ॥ १ ॥ कृतोपवासं सुसू  
 तसु योदृष्यां समाहितः ॥ कर्तारमपि भोक्ता रं विष्णुं सर्वेश्वरं जयेत् ॥ रजले  
 स्पृष्टैर्वरे मूर्त्तौ कलशेषु कुरे रवौ ॥ चंद्रा विनगुरुमो विप्रमाता पितृषु सर्व  
 गम् ॥ ३ ॥ सदक्षिणस्तु सति लासिस्तु जल दे नवः ॥ निवेदये पितृभ्यस्त  
 द ग्रेतु समाहितः ॥ ४ ॥ सोमाय त्वा पितृमते स्वधानम इति स्मरन् ॥ स गुरु ये क  
 म्बाहनाय स्वधानम इति स्मरन् ॥ ५ ॥ दक्षिणे नतु दद्यात्तृतीये दक्षिणपु  
 तम् ॥ यथा यागिरसे वा च स्वधानम इति स्मरन् ॥ ६ ॥ तयोर्मध्ये विनिःक्षिप्य विप्रा  
 सां चोपवेशयेत् ॥ आवाहनादिना पूर्वविष्टे देवा सुपूज्य च ॥ ७ ॥ अहं वसभ्यस्त्वा  
 विप्ररुद्रेभ्यस्त्वा महंततः ॥ सुयो य स्वा महं विप्रभोजयामीति तामदेत् ॥ ८ ॥ आवा  
 हनादिकं शेषं कुर्याच्च पितृकर्मवत् ॥ सोम्याद्रि नु ततो दद्याद्वा सवायद्विजाय  
 तु ॥ ९ ॥ सोम्येयीमयशौद्राय यस्या सुर्षदि ॥ जाय च ॥ विष्टेभ्यश्चाप्यदेवेभ्यस्ति  
 लपात्रं निवेदयेत् ॥ १० ॥ स्वस्त्युदकमथाक्षिप्य जलं दत्वा च तद्धि जान ॥ विमर्ज  
 येत् स्मरन् विष्णुं देवमथाक्षरं विभुम् ॥ ११ ॥ ततः काशकुले शानं निशिनातयन् ॥







五

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA



वे.  
सं.  
सा.  
टी.  
१३

संदर्भयो  
परस्य

12

धसुरपंनिरूपयितुमाह लक्ष्यलक्षणसंबंधस्तु यथा तत्र सशब्दायं शब्दयोर्वी विरुद्धतत्काले तत्कालविशिष्टपरित्यागेनाविरुद्धदेवदेनेन सह लक्ष्यलक्षणभावः असाधारण  
धमिप्रतिपादकं वाक्यं लक्षणवाक्यं तत्प्रतिपाद्यमविशिष्टं वस्तुलक्ष्यं तथा च सोऽयं देवदत्त इत्यस्मिन्निववाक्ये सोऽयं शब्दयोस्तदर्थयोर्वी विरुद्धतत्काले तद्देशवि  
शिष्टपरित्यागेनाविरुद्धदेवदत्तविशिष्टदेवदत्तपिंडेन सह देवदत्तविशिष्टदेवदत्तवाचकशब्दस्य लक्ष्यलक्षणभावसंबंध इत्यर्थः उक्तमर्थं दर्शयितुं योजयति तथा  
नापि वाक्येन त्वंपदयोस्तदर्थोर्वा विरुद्धपरोक्षवापरोक्षत्वादिविशिष्टपरित्यागेनाविरुद्धचैतन्येन सह लक्ष्यलक्षणभावः इहापि तत्त्वंपदयोस्तदर्थयोर्वी विरुद्धपरोक्ष  
परोक्षत्वादिविशिष्टपरित्यागेन तत्त्वंपदाभ्यां लक्ष्यलक्षणभावः संबंध इत्यर्थः अत्र तत्त्वंपदयोस्तदर्थयोस्तत्त्वविशेषयोर्ल  
क्षणत्वं अखंडचैतन्यस्य लक्षणमिति भावः ननु तत्त्वमस्यादिवाक्यानां लक्षणभावसंबंधपुरुषोत्तरेण चैतन्यबोधकत्वमुक्तं अन्यत्र तु शास्त्रेतेषां वाक्यानां भाग  
लक्षणयैव चैतन्यबोधकत्वं प्रतिपाद्यते तत्त्वमस्यादिवाक्येषु लक्षणभावसंबंधोऽप्यतिविरोधमाशङ्क्यते न वस्तुमेव इत्याह इयमेव भागलक्षणेऽप्युच्यते तत्त्वम  
स्यादिवाक्यानां विरुद्धांशपरित्यागेनाविरुद्धचैतन्यमात्रबोधकत्वेन भागलक्षणेऽप्युच्यते इत्यर्थः ननु यथा नीलोत्पलमिति वाक्ये नीलत्वविशिष्टनीलगुणस्योत्पलत्वं  
विशिष्टोत्पलद्रव्यस्य स्वस्वव्यतिरिक्तपुष्पादिगुणांतरपटादिद्रव्यांतरव्यावर्तकत्वेन विशेषणविशेष्यभावमिति स्तुतं तद्विषयसंसर्गस्य नीलगुणवैशिष्ट्यात्वाकारार्थान्त  
येहापि तत्त्वमस्यादिविशिष्टचैतन्यस्य चान्योन्यभेदव्यावर्तकत्वेन विशेष्यभूतसर्वज्ञत्वकिंचिज्ज्ञानेभ्यो निरूपितसंसर्गोत्पलसर्वज्ञत्वादिविशिष्टस्य किंचिज्ज्ञानादिविशिष्टे  
न सहैक्यं वा वाक्यार्थो भवत्वित्याशङ्क्यते तदांशं नित्योर्वैषम्यात्रैवमित्याह अस्मिन्नित्यादिना अस्मिन्वाक्ये नीलमुत्पलमिति वाक्यवद्वाक्यार्थो न संगच्छते अस्मिन्लक्ष्यमपी  
ति वाक्ये नीलोत्पलमित्यादिवाक्यवत्संसर्गोत्पलविशिष्टोत्पलवाक्यार्थो न संगच्छते इत्यर्थः नीलोत्पलमिति वाक्यस्य संसर्गवैशिष्ट्यार्थं प्रतिपादकत्वं कल्पने विरोधाभावं द  
शयति ननु नीलगुणोत्पलनीलगुणस्योत्पलपदार्थोत्पलद्रव्यस्य च शैलपटादिव्यावर्तकत्वेन तान्योन्यविशेषणविशेष्यभावसंसर्गस्यान्यतरविशिष्टस्यान्यतरस्य तदेकः

राम  
१३



वे.  
सा.  
टी.  
१०

13

क्रमेण शरीरानि मित्यादिना शरीरप्रत्यगात्मनीदमिदमारोपयतीति विशेष उच्यते अतिप्राकृतैस्तु आत्मावेपुत्रनामासीदित्यादिश्रुतेः प्रत्यक्षादिसन्निहितस्यापत्त्यादिप  
रित्यादिमादीनि निर्देशः क्रियते इदमिदमित्यादेरेवीया तथाच अतिस्पष्टबुद्धिस्त्विदमपत्त्यादिकमेवाहं अयं पुत्र एवाहमित्येतत्तवां सधर्मा विशेषेणात्मन्यधरो  
पयतीत्यर्थः अत्र श्रुतिमाह प्राकृतस्तत्मावेजायते पुत्र इत्यादिश्रुतेः तत्र युक्तिमाह स्वस्मिन्निवस्य पुत्रेऽपि प्रेमदर्शनात् पुत्रे पुष्टेन चैवाहमेव पुष्टेन पुष्टेन च नु भवा  
च्च पुत्र आत्मेति वदति यथा स्वशरीरेषु मदर्शनादात्मवश्रमः एवं स्वपुत्रादिशरीरेषु प्रेमदर्शनादात्मवश्रमः अत्रानुरूपमनुभवमात्रेण पुत्र इति एतदपे  
क्षया विशिष्टबुद्धिरूपः कश्चिदधिकारी ह देहमेवात्मानं मन्यत इत्याह चावीकस्तु अत्रापि श्रुतिमाह सवा एष पुत्रोऽत्र रसमय इत्यादिश्रुतेः पुत्रादिशरीरस्यात्म  
त्वाभावे युक्तिदर्शयन् पूर्वोक्ताधिकारिणः सकाशात् स्वस्यैव लक्षणं दर्शयति प्रदीपग्रहात् स्वपुत्रं परिगृह्यमाणस्य निर्गमदर्शनात् देहस्यात्मत्वेऽनुभवं च प्रमाणयति  
स्पृहोदंक्षशो मित्याद्यनुभवान् स्पृहशरीरमात्मेति वदति ततोऽप्युल्लेखः कोऽप्यधिकारी श्रुतिश्रुतानुभवेभ्य इन्द्रियाणात्मेति वदतीत्याह परश्चावीकास्त्विन्द्रियाणि  
प्राणाः पुत्रापतिमेत्यव्युचित्यादिश्रुतेः इन्द्रियाणां भावे शरीरे चलनाभावात् प्राणो हं वपिरोह मित्याद्यनुभवान् इन्द्रियाणात्मेति वदति ततोऽप्युत्तमोधिकारी कश्चिदुति  
प्रमाणानुभवबलात् प्राण एवात्मेत्याह अपरश्चावीको न्योतर आत्मा प्राणमय इत्यादिश्रुतेः प्राणभावं इन्द्रियादिचलनायोगाद्दहमशानावानहं पिपासावानित्या  
द्यनुभवाच्च प्राण आत्मेति वदति ततोऽपि विशिष्टोधिकारी कश्चित्त्वमतानुसूतश्रुत्यादिवलान्मन एवात्मेत्याह अन्यस्तु चावीको न्योतर आत्मा मनोमय इत्यादिश्रुतेः म  
नसि पुत्रे प्राणदेरभावादहं संकल्पवानहं विकल्पवानित्याद्यनुभवान् मन आत्मेति वदति उक्तैः भ्यः पंचेभ्यो विलक्षणः कश्चिद्विज्ञानवादी श्रुत्यादिभिर्विज्ञानमात्मेति  
ह वैद्वस्त्वन्योतर आत्मा विज्ञानमय इत्यादिश्रुतेः कर्तुरभावे करणस्य प्राप्तिभावात् अहं कर्ता भोजेत्याद्यनुभवाच्च बुद्धिरात्मेति वदति उक्तैः भ्योतिर्विज्ञो प्राभाकर्ता  
किं कौत्समतोपयोगि श्रुत्यादिवलान् ज्ञानमात्मेति वदत इत्याह प्राभाकर्ता किं कावन्त्योतर आत्मा आतंदमय इत्यादिश्रुतेः बुद्ध्यादीनामज्ञाने लयदर्शनात् अहम

राम  
१०



मेतौविषयवैश्वानरौविष्वातार्कवरेणामिभिः क्रमात्रियंत्रितेनचोअदीदिपपंतकेनक्रमात्स्वरूपशृङ्गपरमगंधानश्रीद्वेपेदुयमप्रजापतिभिः क्रमात्रियंत्रितेनवागादीदिपपंचके  
नक्रमाद्वचनादातगमनविसर्गानंददीनचंदचतुस्रिखशंकराच्युतेः क्रमात्रियंत्रितेनमनोबुद्धाहंकारविज्ञात्वेनांतरिदिंद्वितुः स्वेनक्रमात्संकल्पविकल्पनिश्चयाहंकार्य  
चैत्यात्माश्चसर्वानेतान्स्पृष्टविषयाननुभवतः अस्मिन्नर्थेयुतिर्मेवादयति जागरितस्यानोवहिः प्रज्ञाश्रुतेः अनयोर्विषयवैश्वानरयोर्वनरुक्षावच्छिन्नाकाशदृ  
ष्टान्तेनजलाशयजलगतप्रतिविंबाकाशदृष्टान्तेनचपूर्ववदमेदंसाधयति अत्राप्यनयोः स्पृष्टव्यष्टिसमष्ट्योस्तदुपहितयोर्विषयवैश्वानरयोश्चवनरुक्षावच्छिन्नाका  
शवच्चजलाशयजलवन्नक्तप्रतिविंबाकाशवच्चपूर्ववदमेदः स्पृष्टप्रपंचोत्पत्तिमुपसंहरति एवंपंचोक्तभूतेभ्यः स्पृष्टप्रपंचोत्पत्तिः स्पृष्टसूक्ष्मकारणप्रपंचानां व्यष्टि  
भूतानांप्रत्येकं विवक्ष्यावांतरप्रपंचत्वमभिधायेदानींतेषांसमष्टिरेवमहाप्रपंचत्वंदर्शयति एतेषांस्पृष्टसूक्ष्मकारणप्रपंचानामपिसमष्टिरेकोमहान्यपंचोभवति तत्रदृष्टान्तमि  
दं यथावांतरवनानांसमष्टिरेकंसदृष्टंनभवति यथावांतरजलाशयानांसमष्टिरेकोमहाजलाशयः यथाधवावदिरणलाशयवांतरवनानांसमष्टिः समुदायविवक्ष्या  
एकंसदृष्टंनभवति यथावापीकूपतरङ्गाणामवांतरजलाशयानांसमुदायविवक्ष्याएकोमहानजलाशयोभवति तथास्पृष्टसूक्ष्मकारणप्रपंचानांसमुदायएकोमहान्यः  
पंचोभवतीत्यर्थः एतदेवावांतरमहाप्रपंचोपहितानांविष्यतेजसप्राज्ञानांवैश्वानरदिरणगभीर्याकृतानांचावांतरवनवच्छिन्नाकाशवदवांतरजलाशयगतप्रतिविंबा  
काशवच्चाभेदइत्याह एतदुपहितंविषयवैश्वानरादीश्वरपर्यंतंचैतन्यस्यवांतरवनवच्छिन्नाकाशवदवांतरजलाशयगतप्रतिविंबाकाशवच्चैकमेव चैतन्यप्रपंचयोर्भेदेसर्व  
खल्विदं ब्रूतेतिश्रुत्याविरोधमाशंक्यपरिहरति आभ्यांमहत्प्रपंचतदुपहितंचैतन्याभ्यांतप्रायःपिउवदविविक्तंसदुपहितंचैतन्यंसंबल्लिदं ब्रूतेतिवाक्यस्यवाच्यंभवतिवि  
वित्तंसल्लक्ष्यमपिभवति अन्योन्यतादातयाध्यासेनापिवाक्यस्यवाच्यंभवति तदातयाध्यासरहितंसल्लक्ष्यंभवतीत्यर्थः अध्यारोपप्रकरणमुपसंहरति एवंवस्तुन्य  
वस्तुतोपोध्यारोपः सामान्येनप्रदर्शितः ईश्वरचैतन्ये सामान्यतोमहाप्रपंचाध्यारोपप्रकारंसप्रपंचमभिधायेदानींप्रत्यगात्मनिविशेषाध्यारोपप्रकारेदर्शयितुमुप



वे.  
सा.  
१५

15

सकलदृश्यविलक्षणप्रत्यगात्मनः शुद्धेन परमात्मनो मदेकत्वबोधानंतरं कश्चिदधिकारी लब्धावसरं सर्वोपाधिविनिर्मुक्तं सच्चिदानंदैकरसमनुभवेन जिज्ञासुराचार्यो यदि शुद्ध  
ब्रह्मास्मीति वाक्यार्थमनुस्मरन्वात्मानं दमनुभवतीत्यर्थः तत्प्रकारमाह एवमित्यादिना एवमाचार्येणाध्यासेनापवादपुरःसरं तत्तत्पदार्थोपाधिसंवाक्येनाखंडार्थोऽवबो  
धितेऽधिकारिणोऽहं नित्यशुद्धबुद्धमुक्ते सत्यस्वभावपरमानंदानं तादृशं ब्रह्मास्मीत्यखंडाकाराकाशिता चित्रवृत्तिरुदेति एवं संक्षेपेण प्रमाणप्रकारेणाधिकारिणश्चित्रवृ  
त्तिरुदेतीति संबंधः कदेत्यपेक्षया भाह आचार्येणेति आचार्येणाविषयोऽसंगो निष्कलंचैतन्ये शशशृंगापमानाविद्यया हंकारादिशरीरांतमिष्यापदार्थमध्यारोप्य  
तदपवादपुरःसरं तत्तत्पदार्थोपाधिसंवाक्येनाखंडार्थचेतन्ये जापिते सतीत्यर्थः किंविषयिणी चित्रवृत्तिरुदेती  
त्यसत्त्वशंकां निवारयति अहमिति अहं प्रत्यगात्मा परंब्रह्मास्मीत्यन्यः ब्रह्मण्यनित्यत्वशंकां निवारयति नित्येति शुद्धपदेनाविद्यादिदोषराहित्यं बुद्धपदेन स्वप्रका  
शसत्त्वपत्तेन जाडादिकं व्यवह्रियते मुक्तपदेन सर्वोपाधिराहित्यं सत्यमित्यविनाशिसंभावत्वं परमानंदपदेन वैषयिकमनुष्ठानं दादितुं मुखब्रह्मानंदपर्यंतानां कर्म  
जन्यं न सातिशयत्वेन ह्यधिसुतेन चतुर्ब्रह्मज्ञेभ्यो विलक्षणं निरतिशयानंदस्वरूपं प्रतिपाद्यते अनंतपदेन घटादिवत्परिच्छेदराहित्येन देशतः कालतो वस्तुतश्चापमि  
च्छिन्नत्वं बोध्यते अद्वयमिति नानात्वनिषेधेनैकत्वं बोध्यते इत्यर्थः ननु यथादीपप्रभादित्यमंडलं न व्याप्नोति न च प्रयोजनमस्ति नित्यशुद्धं स्वप्रकाशमात्मानं जडाचित्र  
वृत्तिकं यं विषयीकृत्योदेति किं योजनं चेत्परां क्वाह सातुचित्प्रतिबिम्बसहिता सती प्रत्यगभिन्नमज्ञातं परंब्रह्मविषयीकृत्यतद्गताज्ञानमेव वाधते साचित्रवृत्तिर्न शुद्धब  
्रह्मविषयिणी किं ज्ञानविशिष्टप्रत्यगभिन्नपरंब्रह्मविषयिणी सा चेत्तन्यप्रतिबिम्बसंवलितसती चेत्तन्यगतमज्ञानं निवर्त्तयति तस्याश्चैतन्यावरकाज्ञानजिवृत्तिरेव प्र  
योजनमित्यर्थः नन्वधिकारिणस्तत्त्वमस्यादिवाक्यश्रवणेन ज्ञाखंडं चेत्तन्यवृत्त्या तदाश्रितेऽज्ञाने निवारिते पितृवार्धस्य सकलचराचरात्मकप्रपंचस्य प्रत्यक्षतया भास  
मानत्वात् त्वय मदेतमिद्विरित्याशंकाकारणाज्ञाननाशे तत्कार्यसकलप्रपंचनाशादेतमिद्विरित्येतत्सदृष्टांतमाह यथापटकारणतंतुदाहे पटदाहवद्विलकारणोऽज्ञा

३

राम  
१५



इहैतन्यांशापरित्यागेन त्वंपदार्थं किंचिज्ज्ञत्वादिविशिष्टजीवचेतनं लक्षयतु त्वंपदे वा स्यात्परित्यागेन तत्पदार्थं  
 वृत्तत्वादिविशिष्टजीवचेतनं लक्षयतु किं भागलक्षणं गीकोरेत्याशंक्यनिराकरोति न च तत्पदं त्वंपदे वा स्यात्परित्यागेनांशांतेरसहितं त्वंपदार्थं तत्पदार्थं वा  
 लक्षयतु अतः कथं प्रकारांतरेण भागलक्षणं गीकरणमिति वाच्यं एकेन पदेन स्यात्पदार्थं तरो भयलक्षणायाश्च संभवान् एकेन तत्पदेन त्वंपदेन वा स्यात्परित्यागेन  
 त्वंपदार्थं तरो भयलक्षणाः संभवादित्यर्थः अजहल्लक्षणाः संभवेद्देवंतरमाह पदं तरेण तदर्थं प्रतीतेर्लक्षणाया पुनस्तत्प्रतीत्यपेक्षाभावाच्च तत्पदेन त्वंपदेन वा त  
 तदर्थं प्रतीतौ सत्यां लक्षणाया पुनरन्यतरस्यान्यतरप्रतीत्यपेक्षाभावादित्यर्थः अतः परिशेषात्प्रतीत्यपेक्षाभावांगीकर्तव्यश्रुत्युपसंहरति तस्माद्यथा सोऽयं देवदत्तः  
 निवाको तदर्थो वा तत्काले तत्कालविशिष्टदेवदत्तलक्षणस्य वाक्यार्थस्यांशो विरोधाद्विरुद्धतत्काले तत्कालविशिष्टांशोपक्षित्यज्याविरुद्धदेवदत्तांशमात्रं लक्षयतीति तस्मादि  
 तियस्मात्तत्त्वमस्यादिवाक्ये जहल्लक्षणाः जहल्लक्षणयोरसंभवेन तस्माज्जहल्लक्षणायाविरुद्धांशपरित्यागाविरुद्धाखंडे चेतन्यमात्रं लक्षयतीति योजना तत्र दृष्टांतमि  
 दं यथेति यथा सोऽयं देवदत्तवाक्ये प्रागुक्तजहल्लक्षणाः जहल्लक्षणयोरसंभवेन तदर्थस्य तत्कालतद्देशविशिष्टस्यैतत्काले तद्देशविशिष्टस्य देवदत्तलक्षणवाक्यार्थस्यै  
 कस्मिन्नेतत्काले तत्काले वैशिष्ट्यभागे विरोधदर्शनात्तत्परित्यागेनाविरुद्धदेवदत्तपिंडमात्रं लक्षयतीत्यर्थः मानांतरविरोधस्तु न न्यायेनेत्यर्थः उक्तमर्थं दार्ष्टनिके  
 योजयति तथा तत्त्वमसीति वाक्यंतदर्थो वा परोक्षत्वापरोक्षत्वादिविशिष्टचेतन्येकत्वलक्षणस्य वाक्यार्थस्यांशो विरोधाद्विरुद्धपरोक्षत्वापरोक्षत्वादिविशिष्टांशपरित्यागाऽ  
 विरुद्धमाखंडे चेतन्यमात्रं लक्षयतीति तथा तत्त्वमस्यादिवाक्यस्यापि परोक्षत्वापरोक्षत्वादिविशिष्टचेतन्येकत्वलक्षणमुख्यार्थप्रतिपादकत्वासंभवाज्जहल्लक्षणाया  
 विरुद्धपरोक्षत्वापरोक्षत्वादिविशिष्टांशपरित्यागेनाविरुद्धाखंडे चेतन्यमात्रप्रतिपादकत्वं तस्येत्यर्थः आखंडे चेतन्यप्रतिपादकस्य तत्त्वमसीति वाक्यार्थस्य प्रपञ्चमभिधायते  
 नीयजुर्वेदानुभववाक्यार्थो वक्ष्यते इत्याह अथाधुना हं बुद्धमसीत्यनुभववाक्यार्थो विरूपिते गुरुमुखात्प्रवक्तृत्वलक्ष्यमस्यादिवाक्यप्रवणत्वे हाद्यहंकारांतजडपद

अंशान्तरतुल्यमिति  
 निरूप्यत त्वंपदयोर्वि  
 शेषता



स्य वाक्यार्थत्वांगीकारे प्रमाणान्तरविरोधाभावात्तद्व्यवर्थाः संगच्छते नीलोत्पलपदार्थयोगुणगुणिनोर्विरोधेन विशेषभावसंसर्गस्यानीलगुणविशिष्टेत्यल-  
 र्थत्वांगीकारे प्रत्यक्षादिप्रमाणान्तरविरोधाभावात्तत्र तस्यासंगच्छत इति भावः तत्र मसीति वाक्ये तु तच्च पदार्थयोः सर्वज्ञत्वादिविशिष्टे चैतन्यस्य वा किञ्चित्ज्ञादिविशि-  
 ष्टजीवैतन्यस्य वा तदुभयविशिष्टे चैतन्येकस्य वा वाक्यार्थत्वांगीकारे प्रत्यक्षादिप्रमाणान्तरविरोधात्सर्वस्मद्द्वैषम्यं दर्शयति अत्र तु तदर्थपरोक्षत्वादिविशिष्टे चैतन्यस्य तम-  
 मधीपरोक्षत्वादिविशिष्टे चैतन्यस्य चान्योन्यभेदव्यावर्तकतया विशेषणविशेष्यभावसंसर्गस्यान्यतरविशिष्टस्यान्यतरस्य तदेकस्य च वाक्यार्थत्वांगीकारे प्रत्यक्षादिप्र-  
 माणविरोधाद्वाक्यार्थानसंगच्छते तदुक्तं संसर्गादिविशिष्टो वा वाक्यार्थो नात्र संमतः अत्र द्वैक्यमतेन वाक्यार्थो विदुषां मत इति ननु तत्र मस्यादिवाक्यमखंडार्थकं  
 बोधयति जहल्लक्षणया वा किमजहल्लक्षणया होसि जुह देजहल्लक्षणेति त्रिधा विकल्पः आद्ये दूषणमाह अत्र तु तत्र मसीति वाक्ये जहल्लक्षणानसंगच्छत इत्यन्यः  
 तदेव दर्शयितुं जहल्लक्षणया उदाहरणं तावदाह गंगायां घोषः प्रतिवसतीति वाक्यवज्जहल्लक्षणपिनसंगच्छते मानान्तरविरोधे तु मुख्यार्थस्य परिग्रहे मुख्यार्थेन विना  
 भूते प्रवृत्तिर्लक्षणे स्य त इति वचनाद्गंगायां घोषवसनासंभवाद्गंगायां घोष इति वाक्यस्य मुख्यार्थविरोधे सति मुख्यार्थे परित्यज्य लक्षणया च तत्संबन्धिनिर्तोकावस्थान  
 प्रतिपादनात्तत्र जहल्लक्षणं गीकारे युज्यत इत्याह तत्र गंगाघोषयोरापराधेयभावलक्षणस्य वाक्यार्थस्याविशेषतो विरुद्धत्वाद्वाक्यार्थमशेषतः परित्यज्य तत्संबन्धी स्लक्ष-  
 णया युक्तत्वाज्जहल्लक्षणसंगच्छते आधाराधेयभावलक्षणं सर्वथा परित्यज्येत्यर्थः तत्र मसीति वाक्ये प्राकृतिज्ञातं जहल्लक्षणं संभवमाविष्करोति अत्र तु परोक्षत्वाप-  
 रोक्षत्वादिविशिष्टे चैतन्येकत्वलक्षणस्य वाक्यार्थस्य भागमात्रे विरोधात् तु शब्दः पूर्वस्मद्द्वैषम्यं द्योतयति तत्र मसीति वाक्ये परोक्षापरोक्षे चैतन्येकत्वलक्षणस्य वाक्यार्थस्य  
 विरोधाभावात् परोक्षत्वापरोक्षत्वप्रतिपादकत्वांशो विरोधाच्चैतन्येकत्वे विरोधाभावाद्गंगाघोषादिवाक्यवत्समीक्ष्य तना मुख्यार्थपरित्यागासंभवाज्जहल्लक्षणानसंगच्छतीत्यर्थः  
 अत्र हेतुमाह भागान्तरमपि परित्यज्यात्वं लक्षणया युक्तत्वाज्जहल्लक्षणानसंगच्छते विरुद्धयोः परोक्षत्वापरोक्षत्वयोरेकत्वासंभवेन तत्परित्यागेपि चैतन्यभागस्यैकत्वेः



दे.  
सा.  
श.  
१५

विरोधाभावात्प्रमाणेन युज्यत इत्यर्थः ननु यद्यगंगायां शोधः प्रतिवसतीति वा को गंगापदं प्रवाहलक्षणं स्वार्थपरित्यज्य संबंधितीरपदार्थं लक्षयति तथा तत्त्वमसीति वा को नः  
 त्वदं स्वार्थं परोक्षतः विशिष्टं परित्यज्य जीवचेतनं लक्षयतु यत्वं पदमपि स्वार्थं किंचिज्ज्ञत्वादिविशिष्टं परित्यज्य शरीरचेतनं लक्षयतु तस्माज्जहल्लक्षणैव भवत्विषयां  
 कानि राकरोति न च गंगापदं स्वार्थं परित्यागेन पदार्थं यथा लक्षयति तथा तत्त्वदं पदं वा स्वार्थं परित्यागेन तत्पदार्थं तत्त्वदार्थं वा लक्षयतु अतः कुतो जहल्लक्षणानसंगः  
 ये तश्चिवाचं निराकरणप्रकारमेवाह तत्रेत्यादि तत्र तीरपदाश्रयेण तदर्थी प्रतीतौ लक्षणयत् तत्त्वतीत्यपेक्षायामपि तत्त्वपदार्थयोः श्रूयमाणत्वेन तदर्थप्रतीतौ लक्षणया  
 पुनरन्यतरपदेनान्यतरपदार्थप्रतीत्यपेक्षाभावात् श्रुतवाक्यस्य मुख्यार्थविरोधे मुख्यार्थसंबन्धित्यश्रुतपदार्थं लक्षणोति सर्वजनप्रसिद्धं तथा च गंगायां शोध इत्यत्र श्रुत  
 वाक्यार्थस्य गंगाशोधयोराधारधेयभावसंबन्धस्य विरोधे सति श्रूयमाणं गंगापदं स्वार्थं परित्यागेन तीरपदार्थं लक्षयतीति युक्तं गंगापदार्थस्य तीरपदार्थप्रतीतिमापेक्षा  
 त्वात् श्रुतश्रूयमाणतत्त्वपदयोर्मुखात्तथैव तदर्थसंबन्धित्वं किंचिज्ज्ञत्वादिविशिष्टप्रतीतौ सत्यामपि लक्षणया तत्त्वदेन तत्त्वपदार्थप्रतीत्यपेक्षाभावात् तत्त्वपदेन तत्त्वपदार्थप्रती  
 त्यपेक्षाभावाच्च मुख्यार्थसंभवतिलक्षणायाः अन्यायात्वाज्जहल्लक्षणा न संभवति अत्र शोणोपादतीति वाक्यवदजहल्लक्षणापि न संभवति अत्र तत्त्वमसीति वा कोऽजह  
 ल्लक्षणापि न संभवतीत्यन्यथा कुत इत्यत आह तत्र शोणगुण गमनलक्षणास्य वाक्यार्थस्य विरुद्धत्वात् तदपरित्यागेन तत्त्वसंश्रयाश्चादिलक्षणाया तद्विरोधपरिहार  
 संभवादजहल्लक्षणा संभवति अत्र तु परोक्षत्वापरोक्षत्वादिविशिष्टचेतन्येकत्वस्य वाक्यार्थस्य विरुद्धत्वात् तदपरित्यागेन तत्त्वसंबन्धिनो यस्य कस्यचिदर्थस्य लक्षितत्वेऽपि तद्विरोधा  
 परिहारसंभवादजहल्लक्षणापि न संभवत्येव तत्र शोणोपादतीत्यादिव को बोणगुणस्य गमनासंभवे वाक्यस्य मुख्यार्थविरोधे सति श्रूयमाणं शोणपदं स्वार्थं परित्यागेन हि  
 अयमस्यादिकं लक्षयतीति युक्तं अत्र तु तत्त्वमस्यादिव को तत्त्वपदार्थस्य परोक्षत्वापरोक्षत्वादिविशिष्टचेतन्येकत्वलक्षणस्य मुख्यवाक्यार्थस्य विरुद्धत्वात् तदपरित्यागेन तत्त्वपरोक्ष  
 त्वापरित्यागेन तद्विशिष्टचेतन्यलक्षणार्थस्य लक्षितत्वेऽपि तद्विरोधपरिहाराभावादजहल्लक्षणानसंभवतीत्यर्थः ननु तत्त्वदं स्वार्थं विरुद्धपरोक्षत्वादिविशिष्टचेतन्यलक्षणार्थस्य लक्षितत्वेऽपि तद्विरोधपरिहाराभावादजहल्लक्षणानसंभवतीत्यर्थः ननु तत्त्वदं स्वार्थं विरुद्धपरोक्षत्वादिविशिष्टचेतन्यलक्षणार्थस्य लक्षितत्वेऽपि तद्विरोधपरिहाराभावादजहल्लक्षणानसंभवतीत्यर्थः

तत्त्वमसीति वा कोऽजहल्लक्षणापि न संभवतीत्यन्यथा

तत्त्वमसीति वा कोऽजहल्लक्षणापि न संभवतीत्यन्यथा